NCERT SOLUTIONS

CLASS - 10th

aglasem.com

Class: 10th

Subject : हिन्दी

Chapter : 2

Chapter Name : सपनों के-से दिन

Q1. कोई भी भाषा अपनी व्यवहार में बाधा नहीं बनती पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

Answer. लेखक के जो बचपन के साथी थे वो ज्यादातर राजस्थान या हरियाणा से ही थे, जिनके साथ वो खेला करते थे।सब लोग अलग-अलग भाषाएँ बोला करते थे। वो आपस में एक-दूसरे की भाषा कम ही समझ पाते थे। खेल-खेलते समय यह ज़रा भी पता नहीं चलता था। वे सब भाषा आपस में समझ लेते थे। उनके आपस में व्यवहार से कोई अंतर नहीं आता था।

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q2. पीटी साहब की शाबाश फ़ौज के तमगों सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

Answer. प्रीतमचन्द बहुत ही सख्त शिक्षक थे। कोई भी यदि पंक्ति से सिर इधर-उधर करता या अपनी पिंडली खुजलाने लगता तो वो बाघ की तरह उस लड़के पर झपट्टा मारते थे। लेकिन दूसरी तरफ जब बच्चे कोई भी गलती नहीं करते थे, तो पीटी साहब उन्हें शाबाशी दिया करते थे। बच्चे शाबाश शब्द सुनकर बहुत ही खुश होते थे। उन्हें ऐसा प्रतीत होता था, कि वो किसी फौज के सिपाही है, और उन्हें तमगा मिल गया हो।

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q3. नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

Answer. जब भी लेखक नयी श्रेणी में जाते तो हेडमास्टर जी उन्हें किसी अमीर घर के बच्चे की पुरानी किताबें ले जाकर दिया करते थे। पुरानी किताबों और नयी कापियों से एक विशेष गंध आती थी जिससे लेखक का बालमन उदास हो जाता था। नए मास्टर से पिटाई का डर और पुराने शिक्षकों की बढ़ी हुयी अपेक्षाएं भी उदासी का मुख्य कारण थीं। सभी को ऐसा लगता था कि दर्जा बढ़ने के साथ साथ बच्चे तेज़ हो गए हैं। यदि बच्चे अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते तो वे बच्चों की चमड़ी उधेड़ने लगते।

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q4. स्काऊट परेड करते समय लेखक अपने को महत्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था?

Answer. स्काउट परेड में लेखक बिलकुल साफ़ सुथरे धोबी के द्वारा धुले हुए कपडे, बढ़िया पॉलिश की हुई बूट और मोज़े को पहन कर ठक-ठक करके चलते थे। वह अपने आप को किसी फ़ौजी के जवान से

कम नहीं समझते थे। अपने को एक फ़ौजी समझकर वैसी ही आन-बान शान के साथ बड़ा अकड़कर चलते थे।

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q5. हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

Answer. एक दिन जब मास्टर प्रीतमचंद ने अपनी कक्षा में सभी बच्चों को एक रूप याद करने को दिया जो कि फारसी में था। परंतु बच्चे उस रूप को याद नहीं कर पाये, तो इस पर मास्टर जी ने उन्हें सज़ा दी और मुर्गा बना दिया। सज़ा इतनी ज्यादा हो गई कि बच्चे उसे सहन नहीं कर पाए और कुछ समय में लुढ़कने लगे। तभी वहाँ से हेडमास्टर जी निकले जो बड़े ही नरम दिल के थे। बच्चों की ऐसी हालत देखकर उन्हें अच्छा नहीं लगा और वो ये बात सहन नहीं कर पाए और पीटी मास्टर को निकाल दिया।

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q6. लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

Answer. लेखक को स्कूल जाना बिलकुल पसंद नहीं था उन्हें अच्छा नहीं लगता था। लेकिन वह जब स्कूल में लगे रंग-बिरंगे झंडे को लेकर तथा रुमाल को गले में बांधकर मास्टर पीटी परेड करवाते थे, तो लेखक को बहुत ही अच्छा लगता था। सारे बच्चों को ठक-ठक की आवाज कर राइट टर्न, लेफ्ट टर्न या अबाउट टर्न करते देख मास्टर जी जब उन्हें शाबासी देते तब लेखक को सारे साल में मिले गुड्डो से ज्यादा पसंद आता था। इसी वज़ह से लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगने लगा|

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q7. लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?

Answer. लेखक के स्कूल की छुट्टियाँ होती थी और उनमें कार्य करने को मिलता था। उस कार्य को पूरा करने की समय सारणी लेखक बना लेते थे। कौन सा कार्य, और कितना कार्य कितने समय में या दिन में पूरा करना है। लेखक का सारा समय खेलने में बीत जाता और उनका कार्य नहीं हो पता था। समय धीरे-धीरे बीतने पर वह ओमा नामक ठिगने एवं बलिष्ठ लड़के से समान बहादुर बन जाना चाहता था जो कि उद्दंड था और अपना कार्य न करने के कारण मार खाना आसान समझता था।

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रशन

Q8. पाठ में वर्णित घटनाओं के आधा पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Answer. पीटी सर का कद बहुत ही कम था वो बहुत ही दुबले-पतले और ठिगने थे, उनकी आँखों का रंग भूरा और दिमाग तेज़ था| उनकी वर्दी का रंग खाकी और जूते लम्बे थे, उनको अनुशासन में रहना बहुत पसंद था। यदि कोई बच्चा उनका कहना नहीं मानता तो वे उसे सज़ा देते थे। उनका स्वभाव बड़ा ही कठोर था। उनके ह्रदय में दया नहीं थी। बच्चों के बाल खींचना, उनकी खाल उधेड़ना, ठुडढे मारना उनकी आदत

में था। पीडी सर बड़े ही स्वाभिमानी थे। अपनी नौकरी से निकाले जाने पर या हटाए जाने पर हेडमास्टर जी के आगे न विनती की ना ही गिड़गिड़ाए बल्कि वहाँ से चुपचाप चले गए।

Page : 30 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q9. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

Answer. इस पाठ में अनुशासन को बनाए रखने कि लिए बड़े कठोर दंड, मारना-पीटना जैसी युक्तियाँ अपनाई हुई है। किंतु वर्तमान समय में यह निंदनीय है। वर्तमान समय में शिक्षकों को यह प्रशिक्षण दिया जाता है, कि वो बच्चों की इच्छाओं और भावनाओं का ध्यान रखें एवं उन्हें समझें। उनसे मित्रता एवं ममता का व्यवहार करते हुए उन्हें उनकी गलतियों का अहसास करवाये। इन सब चीजों से बच्चे कभी भी स्कूल जाने से नहीं घबराएंगे बल्कि खुशी-खुशी स्कूल जायेंगे और डरेंगे नहीं।

Page : 31 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q10. बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए।

Answer. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page : 31 , Block Name : बोध-प्रश्न

Q11. प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज्यादा रूचि लेने पर रोकते हैं और समय बर्बाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए-

(क) खेल आपके लिए क्यों जरूरी हैं?

(ख) आप कौन से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?

Answer.

(क) खेलना मनोरंजन तो करता ही है साथ ही साथ हमारे स्वास्थ्य को भी अच्छा रखता है। खेलने से शरीर में स्फूर्ति आती है और शरीर स्वस्थ रहता है। बच्चों में अनुशासन बना रहता है। इससे प्रेम और सहायता की भावना रहती है। इसके साथ ही प्रतिस्पर्धा के गुण से साथ समूह में खेल खेलने से सामाजिक भावना का विकास होता है।

(ख) यदि खेल शरीर के लिए आवश्यक है, तो उतने ही जरूरी और कार्य भी हैं। खेल के साथ पढ़ाई करना भी अति आवश्यक है। यदि खेल स्वस्थ रखने के लिए है, तो पढ़ाई भी भविष्य को बनाने के लिए जरूरी है। अपने कार्य को हमें समय पर पूरा कर लेना चाहिए। अगर हम ज्ञान और शिक्षा पर भी पूरा ध्यान देंगे तो अभिभावकों को खेलने पर कोई भी आपत्ति नहीं होगी ।

Page : 31 , Block Name : बोध-प्रश्न

aglasem.com